(14)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2017–2020

बी.ए. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के लिये अंक निर्धारण योजनाः–

पेपर	नियमित विद्यार्थियों के लिये Max. Marks	स्वाध्यायी विद्यार्थियों के लिये Max. Marks
सैद्धांतिक	50	70
त्रैमासिक मूल्यांकन	10	-
छःमाही मूल्यांकन	10	-
प्रायोगिक प्रथम	40	40
प्रायोगिक द्वितीय	40	40
कुल योग	150	150

डॉ. मीरा काले (अध्यक्ष)

डॉ. सुवर्णा तावसे (सदस्य)

डॉ. लतासिंह मुंशी (सदस्य)

डॉ.सुचित्रा हरमलकर (सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2017–2018

कक्षा	:	बी.ए. प्रथम वर्ष,
विषय	:	नृत्य–भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	प्रथम, **सैद्धांतिक**
अधिकतम अंक	:	50

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी और इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है।

ईकाई–प्रथम

- नृत्य का इतिहास, सिन्धु सम्यता एवं वैदिक काल।
- नाटय की उत्पत्ति कथा (नाटय शास्त्र के प्रथम अध्याय के आधार पर)।
- पुराणों के आधार पर उमांशकर एवं नटवर श्री कृष्ण की नृत्य संबंधी कथाऐं।

ईकाई–द्वितीय

- भारतीय नाट्य परंपरा में गुरू का महत्व।
- नृत्य के अभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक लाभ।
- भरतनाट्यम नृत्य में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों के नामों की जानकारी।

ईकाई–तृतीय

- निम्नलिखित लोक धर्मी नाट्य परम्पराओं की सक्षिप्त जानकारीः–
  01. रामलीला 02. रासलीला 03. राई 04. माच।
- मध्यप्रदेश के किन्ही दो लोक नृत्यों का सामान्य परिचय।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2017–2018

कक्षा	:	बी.ए. प्रथम वर्ष,
विषय	:	नृत्य–भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	प्रथम, **सैद्धांतिक**
अधिकतम अंक	:	50

ईकाई–चतुर्थ

- ताल की प्रारम्भिक जानकारीः–

  01. ताल की व्याख्या 02. ताल के प्रकार

  02. लय की व्याख्या 04. लय के प्रकार

- पारिभाषिक शब्दः– रंग पूजा, मुद्रा, तट्ट अडवु, नाट्ट अडवु, अरमण्डी।

ईकाई–पंचम

- ध्यान श्लोक, शिरो भेदाः, ग्रीवा भेद, दृष्टि भेदाः श्लोक सहित लिखना।
- तट्ट अडवु को ताल में लिपी बद्ध करना।
- श्रीमति रूक्मिणी देवी अरूण्डेल की जीवनी एवं नृत्य में उनका योगदान ।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2017–2018

कक्षा	:	बी.ए. प्रथम वर्ष
विषय	:	नृत्य भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**प्रथम, प्रायोगिक**
अधिकतम अंक	:	40,

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी और इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है। नृत्य कला से विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास भी सुचारू रूप से होता है।

- नमस्क्रिया।
- तट्ट अडवु (तीनों कालो में)।
- नाट्ट अडवु (तीनों कालो में)।
- ध्यान श्लोक, शिरो भेदाः, दृष्टि भेदा, ग्रीवा भेदाः, विनियोग करके दिखाना।
- अडवु को हाथ से ताली देते हुए बोलनें का अभ्यास।

डॉ. मीरा काले	**डॉ. सुवर्णा तावसे**	**डॉ. लतासिंह मुंशी**	**डॉ.सुचित्रा हरमलकर**
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2017–2018

कक्षा	:	बी.ए. प्रथम वर्ष
विषय	:	नृत्य भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**द्वितीय, प्रायोगिक**
अधिकतम अंक	:	40,

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी और इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है। नृत्य कला से विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास भी सुचारू रूप से होता है।

- गुरू वन्दना।
- संयुक्त हस्त मुद्रा विनियोग करना।
- अंसयुक्त हस्त मुद्रा विनियोग करना।
- तिश्रम् अलारिपु करना।
- हाथ से ताली देते हुए अलारिपु बोलने का अभ्यास।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2018–2019

कक्षा	:	बी.ए. द्वितीय वर्ष,
विषय	:	नृत्य–भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**प्रथम सैद्वातिक**
अधिकतम अंक	:	50

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी और इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है।

ईकाई–प्रथम

- नृत्य का इतिहास– रामायण , महाभारत काल।
- नाट्य, नत्त एवं नृत्य का अध्ययन एवं पारस्परिक संबंध।
- भरतनाट्यम नृत्य शैली का अध्ययन।

ईकाई–द्वितीय

- भरत मुनी द्वारा रचित "नाट्य–शास्त्र" का सामान्य परिचय।
- आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचित "अभिनय–दर्पणम्" का सामान्य परिचय।
- ताल के दस प्राण का सामान्य परिचय।

ईकाई–तृतीय

- "अभिनय भेद" आंगिक अभिनय, वाचिक अभिनय, आहार्य अभिनय एवं सात्विक अभिनय।
- स्थानक भेद श्लोक सहित अध्ययन।
- चारी भेद श्लोक सहित अध्ययन।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2018–2019

कक्षा	:	बी.ए. द्वितीय वर्ष,
विषय	:	नृत्य–भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**प्रथम सैद्वातिक**
अधिकतम अंक	:	50

ईकाई–चतुर्थ

- पारिभाषिक शब्दों का अध्ययनः– मंगला चरण, पुष्पांजली, अंग, प्रत्यंग, उपांग, अलारिपु, जतिस्वरम्।
- पताक हस्त, त्रिपताक हस्त, अर्धपताक हस्त, कर्त्तरी मुख हस्त, मयूर हस्त, अर्धचन्द्र हस्त, अराल हस्त, मुष्ठि हस्त, शिखर हस्त विनियोग श्लोक सहित लिखने का अभ्यास।

ईकाई–पंचम

- दक्षिणी ताल पद्धति का पूर्ण ज्ञान।
- नृत्य विषयक निबंधः–
  01. गुरू शिष्य परम्परा।
  02. कलाओं का सामाज पर प्रभाव।
  03. नृत्य सीखने से लाभ।
- किसी एक नृत्य कलाकार की जीवनी एवं नृत्य में उनका योगदानः–
  01. मीनाक्षी सुन्दरम् पिल्ले।
  02. बाला सरस्वती।
  03. श्रीमति गौरी अम्मा।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2018–2019

कक्षा	:	बी.ए. द्वितीय वर्ष
विषय	:	नृत्य भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**प्रथम, प्रायोगिक**
अधिकतम अंक	:	**40**

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी और इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है। नृत्य कला से विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास भी सुचारू रूप से होता है।

- जतिस्वरम्– किसी एक राग पर आधारित।
- पूर्व में सिखाये गये पाठ्यक्रम की पुनरावृति।
- किसी एक भजन या गीत पर भाव प्रस्तुति।
- पताक हस्त, त्रिपताक, अर्धपताक हस्त, कर्त्तरी मुख हस्त, मयूर हस्त मुद्रा, विनियोग करके दिखाना।
- हाथ से ताल देते हुए कोई भी जति एवं कोरेवै, बोलनें का अभ्यास।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2018–2019

कक्षा	:	बी.ए. द्वितीय वर्ष
विषय	:	नृत्य भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**द्वितीय, प्रायोगिक**
अधिकतम अंक	:	**40**

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी और इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है। नृत्य कला से विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास भी सुचारू रूप से होता है।

- पदम्– भक्ति भाव प्रधान।
- सभी अडवुओं का तीनों कालों में करने का अभ्यास।
- अर्धचन्द्र हस्त, अराल हस्त, शुक्रतुण्ड हस्त, मुष्ठी हस्त, शिखर हस्त विनियोग प्रदर्शन करके दिखाना।
- सभी हस्त मुद्राओं को अर्थ सहित बताने एवं प्रदर्शित करने का अभ्यास।
- हाथ से ताली देते हुए जति एवं कोरवै बोलनें का अभ्यास।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2019–2020

कक्षा	:	बी.ए. तृतीय वर्ष,
विषय	:	नृत्य–भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**प्रथम, सैद्वातिक**
अधिकतम अंक	:	**50**

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी ओर इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है।

ईकाई–प्रथम

- नायक भेद का पूर्ण ज्ञान।
- नायिका भेद (अवस्थानुसार) का पूर्ण ज्ञान।
- नाट्य शास्त्र के आधार नव रसों की व्याख्या।
- नाट्य शास्त्र के आधार पर भावों का पूर्ण अध्ययन।

ईकाई–द्वितीय

- भरतनाट्यम नृत्य शैली की उत्पत्ति एवं विकास का पूर्ण ज्ञान।
- भरतनाट्यम नृत्य में प्रयुक्त सभी तालों का सभी जातियों में प्रयोग का पूर्ण ज्ञान।
- निम्न लिखित विषयों का अध्ययनः–

  01. कोरत्ति कुम्मी 02. कुम्मी 03. यक्षगान 04. तेखकुत्तु।

ईकाई–तृतीय

- नाट्य शास्त्र के आधार पर प्रेसागृह (रंगमंच) का पूर्ण अध्ययन।
- अष्टपदी की व्याख्या एवं महाकवि जयदेव का संक्षिप्त परिचय।
- परिभाषाऐं :– शब्दम्, पद्म, वर्णम्, कीर्त्तनम्, तिल्लाणा।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2019–2020

कक्षा	:	बी.ए. तृतीय वर्ष,
विषय	:	नृत्य–भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**प्रथम, सैद्धातिक**
अधिकतम अंक	:	**50**

ईकाई–चतुर्थ

अभिनय दर्पणम् के आधार पर दशावतार हस्त का पूर्ण ज्ञान।

देवहस्तों का पूर्ण ज्ञान।

नाट्य शास्त्र के चतुर्थ अध्याय के आधार पर नाट्योंत्पत्ति की कथा का पूर्ण ज्ञान।

ईकाई–पंचम

- नृत्य क़लाकारों के गुण दोष का अध्ययन।
- नृत्य विषयक निबंधः– नृत्य एवं योग, नृत्य में संगीत का महत्व, शास्त्रीय नृत्यों में प्रयोग धार्मिता।
- निम्नलिखित नृत्य गुरूओं का जीवन परिचय एवं योगदानः– चिन्नैया, पुन्नैया, बड़ीवेलू, शिवानन्द, उदय शंकर।

डॉ. मीरा काले	डॉ. सुवर्णा तावसे	डॉ. लतासिंह मुंशी	डॉ.सुचित्रा हरमलकर
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2019–2020

कक्षा	:	बी.ए. तृतीय वर्ष
विषय	:	नृत्य भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**प्रथम, प्रायोगिक**
अधिकतम अंक	:	**40**

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी और इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है। नृत्य कला से विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास भी सुचारू रूप से होता है।

- शब्दम् प्रस्तुत करने का अभ्यास।
- पदम् (वात्सल्य रस) प्रस्तुत करने का अभ्यास।
- पूर्व के पाठ्यक्रम में सीखे हुए नृत्यों का भी अभ्यास।
- कपित्थ हस्त, सूची हस्त, चन्द्र कला हस्त, पद्यम कोष हस्त, सर्प शीर्ष हस्त, मुद्रा विनियोग, उनके अर्थ एवं उपयोगिता का अध्ययन/प्रदर्शन करके दिखाना ।
- हाथ से ताली देते हुऐ सीखे हुए अंगों को गाने को गा कर दिखाना।

डॉ. मीरा काले (अध्यक्ष)	**डॉ. सुवर्णा तावसे** (सदस्य)	**डॉ. लतासिंह मुंशी** (सदस्य)	**डॉ.सुचित्रा हरमलकर** (सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2019–2020

कक्षा	:	बी.ए. तृतीय वर्ष
विषय	:	नृत्य भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	**द्वितीय, प्रायोगिक**
अधिकतम अंक	:	**40**

उद्देश्य : इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हे सजोकर रखना हमारा दायित्व है। इन कलाओं के उन्नयन एवं संवर्धन हेतु इन्हे उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इन विषयों के माध्यम से जहॉ आज का विद्यार्थी इन कलाओं के इतिहास से परिचित होता है, वहीं दूसरी और इन कलाओं का प्रायोगिक ज्ञान उसे सुसंस्कृत व आत्मविश्वासी बनाता है। नृत्य कला से विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास भी सुचारू रूप से होता है।

- महाकवि जयदेव द्वारा रचित अष्टपटी का प्रदर्शन।
- कोई भी एक तिल्लाणा का प्रदर्शन।
- पूर्व के पाठ्यक्रम में सीखे सभी अंगों का प्रदर्शन।
- मृग शीर्ष हस्त, सिंह मुख हस्त, कांगुल हस्त, अलपद्य हस्त, मुद्रा विनियोग, श्लोक सहित प्रदर्शित करना।
- किसी एक लोक नृत्य का प्रदर्शन।
- हाथ से ताली देते हुऐ जति, कोरवै या तिरभानम् बोलकर दिखाना।

डॉ. मीरा काले	**डॉ. सुवर्णा तावसे**	**डॉ. लतासिंह मुंशी**	**डॉ.सुचित्रा हरमलकर**
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2017–2020

कक्षा	:	बी.ए. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष
विषय	:	नृत्य भरतनाटयम्
प्रश्न पत्र	:	प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक

संदर्भित ग्रंथ सूचीः–

- आचार्य भरत मुनी द्वारा रचित "नाट्य–शास्त्र" ।
- आचार्य नन्दिकेश्वर द्वारा रचित "अभिनय–दर्पणम्"।
- आचार्य शारंग देव द्वारा रचित "संगीत रत्नाकर"।
- डॉ. पुरू दाधीच द्वारा रचित "नृत्य–निबंध"।
- डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्गद्वारा रचित "भरतनाट्यम"।
- डॉ. सरोजा वैद्यनाथन द्वारा रचित "भरतनाट्यम"।
- डॉ. पुरू दाधीच द्वारा रचित "नृत्य–निबंध"।
- डॉ. कनक रेले द्वारा रचित "भाव–निरूपण"।
- डॉ. विभा दाधीच द्वारा रचित "नृत्त हस्त मुद्राएँ"।

डॉ. मीरा काले	**डॉ. सुवर्णा तावसे**	**डॉ. लतासिंह मुंशी**	**डॉ.सुचित्रा हरमलकर**
(अध्यक्ष)	(सदस्य)	(सदस्य)	(सदस्य)